नईदुनिया

संपादकीय

अब मंत्री-विधायक भी हिंसा की चपेट में

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी मणिपुर में हिंसा की शुरुआत के डेढ़ वर्ष से ज्यादा बीत चुके हैं, मगर आज भी वहां अराजकता बेलगाम और सरकार लाचार खड़ी दिखती है। आखिर क्या वजह है कि हर कुछ रोज बाद हिंसा की बड़ी घटनाएं एक तरह से सरकार के सामने चुनौती देती हुई लग रही हैं और उस पर काबू पाने में वहां का प्रशासन पूरी तरह से नाकाम है। कुछ दिन पहले वहां गंभीर हिंसक घटनाओं का नया दौर फिर से शुरू हो गया है और आम लोगों की जान जा रही है।

हाल ही में एक महिला की हत्या करके उसका घर जला दिया गया था। उसके बाद एक अन्य शिविर से छह लोग लापता हो गए। बाद में उनके शव मिलने की खबरें आईं। अब स्थानीय लोगों के बीच सरकार की इस व्यापक नाकामी के खिलाफ गुस्सा भड़क गया है और इस तरह हिंसा का दायरा अब और फैलता जा रहा है। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वहां कुछ लोगों ने अब विधायकों और मंत्रियों के घरों में आग लगाना शुरू कर दिया है। शनिवार और रविवार को कई विधायकों और मंत्रियों के घरों पर लोगों की भीड़ ने हमला किया, आग लगा दी और बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ की।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि कुकी और मैतेई समुदायों के बीच लंबे समय से चल रही हिंसा के बाद अब लोगों का गुस्सा सरकार खिलाफ भड़क रहा है और नेता भी हमलों के निशाने बनने लगे हैं। निश्चित रूप से यह स्थिति किसी भी हाल में उचित नहीं मानी जा सकती, मगर ताजा हिंसा से यही लगता है कि इसमें शामिल दोनों समुदाय अब शायद इससे ऊब रहे हैं और उनका आक्रोश सरकार और राजनीतिक तबके के खिलाफ फूट रहा है। सवाल है कि किसी भी सरकार को अपना समूचा सुरक्षा तंत्र झोंकने के बाद हिंसक घटनाओं पर काबू पाने में कितना वक्त लगना चाहिए?

पिछले वर्ष मई महीने में मैतेई समुदाय को जनजाति का दर्जा दिए जाने के सवाल पर दो समुदायों के बीच जिस हिंसक टकराव की शुरुआत हुई थी, उसमें अब तक सवा दो सौ से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। राज्य सरकार की पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के साथ-साथ सेना तक ने वहां मोर्चा संभाला। सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार की ओर से शांति कायम करने के लिए कई स्तर पर कवायदें हुईं। मगर हालत यहां तक पहुंच गई है कि अराजकता पर काबू पाना तो दूर, अब मंत्री-विधायकों के घर भी हिंसा की आग का शिकार होने लगे हैं।

कहने को शांति कायम करने के मकसद से दोनों पक्षों के बीच बातचीत की प्रक्रिया शुरू कराने का दावा कई बार किया गया, लेकिन आज भी वहां जिस तरह लोगों के घरों पर हमले किए जा रहे हैं, उसमें किसी की हत्या कर दी जा रही है, उससे साफ है कि सरकार की कोशिशें या तो बेमन से की गईं या फिर उसके पीछे कोई स्पष्ट दृष्टि और इच्छाशक्ति नहीं थी। हैरानी की बात यह है कि अब भी सरकार एक तरह से 'सब कुछ सामान्य होने' की मुद्रा में बेफिक्र दिख रही है। वरना क्या कारण है कि राज्य में गृह युद्ध की हालत लंबे वक्त से कायम है, लेकिन केंद्र की ओर से भी राज्य सरकार को जवाबदेह ठहराने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। अब फिर सीआरपीएफ की पचास कंपनियां भेजने का फैसला किया गया है, मगर वहां की हिंसा अब जिस शक्ल में पहुंच गई लगती है, उसके लिए अब बहाने बनाने के बजाय तात्कालिक तौर पर हिंसा को रोक कर उसकी जड़ों को सुलझाने की जरूरत है।

सुंदरता के लिए भी वरदान है तुलसी

दृष्टिकोण

शहनाज़ हुसैन

तुलसी को जड़ी-बूटियों का राजा माना जाता है। आयुर्वेद में इसे पवित्र पौधा माना जाता है। तुलसी भारतीय घरों में पूजा और औषधि दोनों के लिए इस्तेमाल की जाती है। तुलसी को लोक कथाओं/धार्मिक मान्यताओं में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। दुनिया भर में तुलसी की खेती का लंबा इतिहास रहा है और सदियों से इसका इस्तेमाल पवित्र, सुगंधित और सजावटी जड़ी-बूटी के रूप में किया जाता रहा है। अभी तक तुलसी की लगभग 60 प्रजातियों की पहचान की गई है, जिनकी विश्व भर में खेती की जाती है।

सेहत के साथ तुलसी सौन्दर्य निखारने के काम में भी लाई जाती है। तुलसी में एंटीऑक्सीडेंट एंटीसेप्टिक और एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो त्वचा की रंगत को निखारने में सहायक साबित होते हैं। ये स्किन को ठंडक देने के साथ चेहरे के ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ा कर चेहरे पर सोने से निखार देने में मददगार साबित होते हैं।अगर आप काफी व्यस्त रहते हैं और सौन्दर्य प्रसाधनों के लिए समय नहीं निकाल पाते तो भी आप तुलसी का सेवन कर सकते हैं।

आप तुलसी को चेहरे पर सीधा भी लगा सकते हैं। इसके लिए आप तुलसी के कुछेक पत्ते पीस कर रस निकाल लें और इस रस को चेहरे पर लगा लें। इसे आधे घंटे बाद ताजा पानी से धो डालिये। कांच के बर्तन में तुलसी की कुछ पत्तियां लेकर इसमें 2 चम्मच चावल का आटा और 1 चम्मच शहद डालकर पेस्ट तैयार कर लें और इस पेस्ट को अपने चेहरे पर लगा कर आधे घण्टे बाद चेहरे को पानी से अच्छी तरह धो लें। इससे त्वचा में लचीलापन पन आता है।

तुलसी का फेस पैक बनाने के लिए 10-15 तुलसी के पत्ते, दो चम्मच दही, आधा चमच्च शहद और एक चमच्च चावल का आटा लें। तुलसी के पत्तों को पीस कर एक कटोरी में डाल लें। अब इसमें दही, शहद और चावल का आटा मिला लें। इन सभी चीज़ों का मिश्रण करके क्रीमी पेस्ट तैयार कर लें। इस फेस पैक को एयर टाइट बर्तन में फ्रीज में रख लें। जब भी जरूरत पड़े तो इसे चेहरे पर 15 मिनट तक लगाने के बाद चेहरे को साफ़ पानी से धो डालिये। इसके नियमित इस्तेमाल से चेहरा कोमल, मुलायम और आकर्षक दिखेगा।

तुलसी का फेस पैक बनाने के लिए 10-15 तुलसी के पत्ते, दो चम्मच दही, आधा चमच्च शहद और एक चमच्च चावल का आटा लें। तुलसी के पत्तों को पीस कर एक कटोरी में डाल लें। अब इसमें दही, शहद और चावल का आटा मिला लें। इन सभी चीज़ों का मिश्रण करके क्रीमी पेस्ट तैयार कर लें। इस फेस पैक को एयर टाइट बर्तन में फ्रीज में रख लें। जब भी जरूरत पड़े तो इसे चेहरे पर 15 मिनट तक लगाने के बाद चेहरे को साफ़ पानी से धो डालिये। इसके नियमित इस्तेमाल से चेहरा कोमल, मुलायम और आकर्षक दिखेगा।

तुलसी त्वचा के अतिरिक्त बालों की सुन्दरता में भी काफी सहायक है। तुलसी के पत्तों को पीस कर कांच की कटोरी में डाल लें। अब इसमें नारियल तेल की कुछ बूंदे मिलाकर उसे बालों पर लगाएं। आधा घण्टा बाद बालों को हल्के शैम्पू से धो डालें। इससे बाल कुदरती तौर पर मजबूत होंगे और उनका झड़ना भी कम हो जायेगा।

तुलसी का टोनर बनाने के लिए तुलसी के पत्तों को पानी में उबालें और इस पानी को ठंडा करके एक बोतल में भर कर रख लें। रोज रात को सोने से पहले इस टोनर को चेहरे पर लगाने से त्वचा में ताजगी बनी रहेगी और पोर्स भी कम हो जाएंगे। तुलसी के तेल को त्वचा पर लगाने से त्वचा सम्बन्धी विकारों से लड़ने में मदद मिलती है जिससे त्वचा पर कील, मुहांसों आदि से छुटकारा मिलता है और त्वचा साफ और निखरी नजर आती है।

तुलसी के पत्तों का स्क्रब त्वचा के डेड सेल्स को हटाने में कारगर साबित होता है जिससे चेहरे की प्रकृतिक सुन्दरता निखर कर बाहर आती है। तुलसी के पत्तों का स्क्रब बनाने के लिए 10 -15 तुलसी के पत्ते, एक चम्मच शहद, एक चम्मच नींबू रस, एक चम्मच चीनी और चावल और ओटमील एक चम्मच लें। सबसे पहले तुलसी के पत्तों को धोकर सुखा लें। फिर उन्हें ब्लेंडर में डालें और पीसकर चिकना पेस्ट बना लें। कांच के कटोरे में तुलसी की पेस्ट को लेकर उसमें शहद, नींबू का रस, चीनी, आटोमील और चावल का आटा डालकर अच्छी तरह मिश्रण बना लें। इस मिश्रण को अपने चेहरे पर हल्के-हल्के लगाकर चेहरे की मसाज करें और 10 मिनट बाद उसे गुनगुने पानी से धो लें। इससे आपकी त्वचा सुन्दर और मुलायम हो जाएगी।

तुलसी का इस्तेमाल स्किन इंफेक्शन जैसी समस्याओं के लिए भी फायदेमंद होता है। तुलसी का रस दाग-धब्बे हटाने में मदद करता है और त्वचा की रंगत को निखारता है। तुलसी का इस्तेमाल त्वचा की तरह बढ़ती उम्र से होने वाली झुर्रियों को रोकता है और त्वचा को चमकदार बनाता है। 1 गिलास पानी में तुलसी के पत्तों को उबाल कर इसकी चाय बना कर रोज सुबह सेवन करें। ये आपकी सेहत, बालों और त्वचा तीनों के लिए फायदेमंद साबित होगा।

अगर आप चेहरे पर दाग, धब्बों और मुहांसों से परेशान हैं तो तुलसी मददगार है। दो लौंग के साथ नीम और तुलसी के पत्तों को बराबर मात्रा में मिलाकर थोड़ा पानी डाल कर इसे पीस लें। इसे आँखों के आसपास क्षेत्र को छोड़ कर बाकी सारे चेहरे पर लगाएं और आधा घण्टा बाद साफ ताजा पानी से चेहरा धो डालिये। यह फेस मास्क मुंहासों और काले धब्बों को कम करेगा।

नैनो का पोषण

डॉ. इशिता जी. त्रिपाठी और नितिशा मान

नैनो- व्यवसाय और अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यम (आईएमई) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के अंदर एक अलग खंड हैं। इसमें हाइपरलोकल कार्यक्षमता है। उनकी विशिष्ट विशेषताओं के कारण, उनके लिए विशेष प्रावधान रखना महत्वपूर्ण है ताकि वे अपने आप को बनाए रखते हुए व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य हो जाएं। भारत सरकार इस दिशा में वचनबद्ध है।

पहले कदम के रूप में उद्यम असिस्ट प्लेटफॉर्म (यूएपी) को जनवरी 2023 में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा आईएमई के पंजीकरण की सुविधा के लिए शुरू किया गया था। इन्हे सीजीएसटी अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत रिटर्न दाखिल करने से छूट दी गई है। यूएपी के शुभारंभ के बाद से 2 करोड़ 60 लाख से अधिक रोजगार के साथ 2 करोड़ 20 लाख से अधिक उद्यमों ने पंजीकरण किया है। यूएपी नामित एजेंसियों को एक इंटरफेस प्रदान करता है, जो अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक, सूक्ष्म वित्त संस्थान, एनबीएफसी आदि हो सकते हैं, जो थोक में अपने आईएमई ग्राहकों के सहमति-आधारित डेटा को पंजीकृत कर सकते हैं। पीएम स्वनिधि जैसे सरकारी कार्यक्रमों के आईएमई लाभार्थियों को भी यूएपी में शामिल किया जाता है।

उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य को जारी रखते हुए, सितंबर 2023 में शुरू की गई पीएम विश्वकर्मा योजना का उद्देश्य 18 ट्रेडों के कारीगरों और शिल्पकारों को एंड-टू-एंड सहायता प्रदान करना है, जो अपने हाथों और उपकरणों से काम करते हैं। योजना के घटकों में पीएम विश्वकर्मा प्रमाणपत्र और आईडी कार्ड के माध्यम से मान्यता, कौशल उन्नयन, टूलकिट प्रोत्साहन, 5 प्रतिशत ब्याज दर पर जमानत से मुक्त ऋण, 8 प्रतिशत तक की ब्याज सहायता, डिजिटल लेनदेन और विपणन सहायता के लिए प्रोत्साहन शामिल हैं। अनिवार्य रूप से यह विश्वकर्मा की आकांक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से सभी प्रकार के समर्थन को शामिल करता है, जिनके पास आत्मनिर्भर व्यवसाय स्थापित करने के लिए आवश्यक उद्यमशीलता कौशल हैं। प्रभावी रूप से सरकार ने उन संस्थाओं की पहचान करने का मार्ग प्रशस्त किया है जिनके पास क्षमता है, लेकिन एमएसएमई चैंपियन के रूप में विकसित होने के साधन नहीं थे।

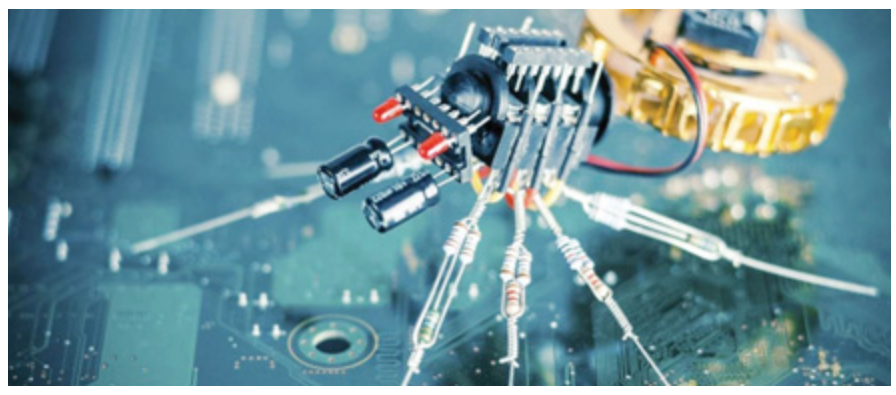

नैनो उद्यमियों के लिए एक बड़ी चुनौती ये है कि वे क्रेडिट के लिए नए हैं या उनके पास कोई क्रेडिट या व्यावसायिक इतिहास नहीं है, वित्त तक पहुंच है। कोई भी क्रेडिट इतिहास बैंकों को ऋण देने से नहीं रोकता है। एक सक्षम इकोसिस्टम बनाने के लिए, मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए उपाय किए गए हैं। इस दिशा में एक कदम एमएसएमई मंत्रालय और आरबीआई की अधिसूचना है कि प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण लाभों का लाभ उठाने के उद्देश्य से यूएपी प्रमाणपत्रों को उद्यम पंजीकरण प्रमाणपत्र के समान माना जाएगा। पीएम स्वनिधि, पीएम विश्वकर्मा जैसी योजनाओं के लाभार्थियों के लिए आरबीआई द्वारा अधिसूचित पेमेंट्स इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (पीआईडीएफ) योजना जैसी पहलों के माध्यम से, देश में स्वीकृति उपकरणों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है, टियर -3 से टियर -6 केंद्रों में भुगतान स्वीकृति बुनियादी ढांचे का विकास करना, लेनदेन की लागत को कम करना और छोटे व्यवसायों की स्वीकार्यता में वृद्धि करना। पीआईडीएफ प्रावधान डिजिटल भुगतान एग्रीगेटर्स को निम्नलिखित प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं

नैनो उद्यमियों के लिए एक बड़ी चुनौती ये है कि वे क्रेडिट के लिए नए हैं या उनके पास कोई क्रेडिट या व्यावसायिक इतिहास नहीं है, वित्त तक पहुंच है। कोई भी क्रेडिट इतिहास बैंकों को ऋण देने से नहीं रोकता है। एक सक्षम इकोसिस्टम बनाने के लिए, मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए उपाय किए गए हैं। इस दिशा में एक कदम एमएसएमई मंत्रालय और आरबीआई की अधिसूचना है कि प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण लाभों का लाभ उठाने के उद्देश्य से यूएपी प्रमाणपत्रों को उद्यम पंजीकरण प्रमाणपत्र के समान माना जाएगा। पीएम स्वनिधि, पीएम विश्वकर्मा जैसी योजनाओं के लाभार्थियों के लिए आरबीआई द्वारा अधिसूचित पेमेंट्स इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (पीआईडीएफ) योजना जैसी पहलों के माध्यम से, देश में स्वीकृति उपकरणों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है, टियर -3 से टियर -6 केंद्रों में भुगतान स्वीकृति बुनियादी ढांचे का विकास करना,

- नैनो उद्यमों को सब्सिडी वाले डिजिटल भुगतान उपकरण और क्यूआर कोड। भौतिक या डिजिटल उपकरणों की तैनाती को सब्सिडी देने के अलावा, अन्य समकालीन उपकरणों, जैसे साउंडबॉक्स डिवाइस, नियर फील्ड कम्युनिकेशन और आधार-सक्षम बायोमेट्रिक स्कैनर उपकरणों को भी भीम आधार पे के माध्यम से स्वीकार करने के लिए सब्सिडी दी जाती है। इस तरह के पूरक डिजिटलीकरण और डिजिटल ट्रेल्स उन्हें अधिक स्पष्ट बनाएंगे, एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर वैकल्पिक क्रेडिट मूल्यांकन मॉडल का समर्थन करेंगे और उनके लिए क्रेडिट अदायगी को बढ़ाएंगे।

क्रेडिट गारंटी योजना के अंतर्गत आईएमई के लिए विशेष वितरण की घोषणा फरवरी 2024 में उदार शर्तों के साथ की गई थी, जिसमें 20 लाख रुपये तक की ऋण राशि का 85 प्रतिशत गारंटी कवरेज बढ़ाया और 10 लाख रुपये तक के ऋण के लिए 0.37प्रतिशत का कम वार्षिक गारंटी शुल्क और 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये के बीच के ऋण के लिए 0.45प्रतिशत शामिल है। इन पहलों से औपचारिक ऋण देने वाली संस्थाओं के जोखिम के मुद्दे का समाधान होगा जो उन्हें नैनो उद्यमों और आईएमई को ऋण देने से सजग करता है।

संसाधनों, समर्थन और जागरूकता के संयोजन से, नैनो व्यवसाय और अपेक्षाकृत बड़े एमएसएमई एक साथ पनपते हैं, एक स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं। अंतिम लक्ष्य जमीनी स्तर की संस्थाओं को शामिल करते हुए आर्थिक आधार को मजबूत करना है ताकि अर्थव्यवस्था की बड़ी अधिरचना चमकती रहे।

(लेखक द्वय अतिरिक्त विकास आयुक्त, एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार तथा उप निदेशक, एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार हैं।)

आजकल

जलवायु परिवर्तन का बुरा दौर

एक तरफ दुनिया जलवायु संकट का सामना कर रही है, तो दूसरी तरफ विकसित देश अपने दायित्व से मुकरते दिख रहे हैं। हैरत है कि वे विकासशील देशों पर जिम्मेदारी थोपते हैं, वहीं वे सर्वाधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी करते हैं। इस तरह विश्व का जलवायु संकट दूर करने का संकल्प हर बार अधूरा रह जाता है। यही वजह है कि दुनिया का एक बड़ा हिस्सा जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान जिस तरह बढ़ रहा है, वह केवल गरीब देशों की समस्या नहीं हैं। इसकी आंच विकसित देशों तक भी पहुंच रही है। बावजूद इसके बाकू में आयोजित 'सीओपी-29' शिखर सम्मेलन के पहले सप्ताह का कोई हासिल नहीं है, तो यह चिंता की बात है।

इस पर भारत सहित विकासशील देशों की निराशा स्वाभाविक है। यह समझना मुश्किल है कि इस मुद्दे पर न्यायसंगत जिम्मेदारी लेने के लिए बड़े देश क्यों तैयार नहीं है? सभी जानते हैं कि वित्तीय और प्रौद्योगिकी की मदद के बिना विकासशील देश अपने बूते जलवायु संकट से नहीं निपट सकते। जिन देशों के पास सर्वाधिक क्षमता और संसाधन है, उनकी बेरुखी डराती है। आज जरूरत इस बात की है कि चरम जलवायु परिवर्तन की ओर बढ़ रही दुनिया जल और पर्यावरण को बचाने के लिए एकजुट हो।

जलवायु सम्मेलन यानी 'सीओपी-29' का किसी ठोस और नतीजा देने वाले निष्कर्ष की ओर न बढ़ना यह दर्शाता है कि विकसित और विकासशील देशों में किसी मुद्दे पर अभी एकराय नहीं है। गंभीरता से चर्चा न होने पर भारत ने सवाल उठाया है। इसके समांतर डोनाल्ड ट्रंप की सत्ता में दोबारा वापसी के बाद आशंका जताई जा रही है कि अमेरिका जलवायु संकट से निपटने की अपनी प्रतिबद्धताओं से पीछे हट सकता है।

दरअसल, ट्रंप ने जलवायु परिवर्तन को ही धोखा करार दिया है और कहा है कि वह पेरिस समझौते से अमेरिका को बाहर निकालेंगे। अगर अमेरिका इस रुख पर कायम रहता है, तो इस सम्मेलन का क्या औचित्य रहेगा? बड़े देश ही पल्ला झाड़ेंगे और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में मनमानी भी करेंगे, तो विकासशील देशों के लिए यह कैसे संभव है कि वे अपने दम पर अगली पीढ़ी को स्वच्छ और सुरिक्षत दुनिया दे पाएं!

जय भवानी का उद्घोष कर बलिवेदी पर सो गई एक वीरांगना

झलकारी बाई की जयंती 22 नवंबर पर विशेष

गौरव अवस्थी

झलकारी बाई का जन्म झांसी के पास भोजला गांव में एक कृषक परिवार में 22 नवंबर 1830 को हुआ था। पिता सदौवा सिंह और माँ जमुना देवी के घर जन्म लेने वाली झलकारी बाई की वीरता की कई कहानियां बुंदेलखंड में आज भी सुनाई जाती हैं। किसान होने के बावजूद झलकारी बाई के पिता एक वीर पुरुष थे। छोटी ही उम्र में झलकारी के सिर से माँ जमुना देवी का साया उठ गया। पिता ने बेटे की तरह उनका लालन-पालन किया। उन्होंने अपनी बेटी को घुड़सवारी तथा अस्त्र-शस्त्र संचालन सिखाए। उन्होंने झांसी की रानी की सेवा में तोपची के रूप में नियुक्त युवक पूरन सिंह कोरी के साथ झलकारी बाई का विवाह कर दिया।

देश के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में झांसी राज्य की आन-बान और मर्यादा के लिए वीरांगना झलकारी बाई और उनके पति पूरन सिंह कोरी ने अंग्रेजों से युद्ध करते हुए अपना बलिदान दिया था। वह झलकारी बाई ही थीं जिन्होंने रानी को अंग्रेजों के चंगुल से सकुशल निकालने के लिए झांसी की रानी का वेश धारण कर गोरे सैनिकों से युद्ध करके उनके छक्के छुड़ा दिए। उनके बलिदान को याद किए बिना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की स्मृति अधूरी ही रहती है।

झलकारी बाई का जन्म झांसी के पास भोजला गांव में एक कृषक परिवार में 22 नवंबर 1830 को हुआ था। पिता सदौवा सिंह और माँ जमुना देवी के घर जन्म लेने वाली झलकारी बाई की वीरता की कई कहानियां बुंदेलखंड में आज भी सुनाई जाती हैं। किसान होने के बावजूद झलकारी बाई के पिता एक वीर पुरुष थे। छोटी ही उम्र में झलकारी के सिर से माँ जमुना देवी का साया उठ गया। पिता ने बेटे की तरह उनका लालन-पालन किया। उन्होंने अपनी बेटी को घुड़सवारी तथा अस्त्र-शस्त्र संचालन सिखाए। उन्होंने झांसी की रानी की सेवा में तोपची के रूप में नियुक्त युवक पूरन सिंह कोरी के साथ झलकारी बाई का विवाह कर दिया। पूरन ने ही पहली बार रानी से झलकारी बाई को मिलवाया। रानी झलकारी बाई से पहली बार में बहुत प्रभावित हुईं और उन्हें अपनी सेना में नियुक्त कर लिया। अपनी सूझबूझ, संगठन क्षमता और अस्त्र-शस्त्र संचालन में कुशलता के चलते वह जल्दी ही रानी की विश्वास पात्र बन गई।

सेवा में नियुक्त होने के थोड़े दिन बाद ही अंग्रेज फौज ने झांसी पर घेरा डाल दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने आपातकालीन युद्ध परिषद की बैठक बुलाई। इसी बैठक में झलकारी बाई ने रानी के सामने प्रस्ताव रखा कि दुश्मन को धोखे में डालने के लिए आपका वेश धारण करके मैं छोटी-सी टोली के साथ रहकर अंग्रेजी सेना पर आक्रमण करूं। दुश्मन मुझे रानी समझकर पकड़ने के लिए पीछा करें, तभी आप दूसरे मोर्चे से किले से निकल जाएं। रानी को झलकारी बाई की योजना बहुत पसंद आई लेकिन उन्होंने झलकारी की जान जोखिम में डालने के लिए प्रस्ताव खारिज कर दिया।

झलकारी ने फिर कहा कि भारत माता को आपकी जरूरत है। मेरे रहने और न रहने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इस पर रानी लक्ष्मी बाई योजना से सहमत हुई और झलकारी को अपनी छाती से चिपका कर कहा कि जिस राज्य में झलकारी की तरह की वीर नारियां हैं, उस राज्य का दुश्मन कभी बाल बांका नहीं कर सकता। झांसी की रानी को अपने ही गद्दारों से परेशान थीं।

झलकारी बाई की इस योजना को भी राज्य का एक गद्दार, अंग्रेज सैनिक को बताने जा ही रहा था कि झलकारी वहां पहुंच गई और अपनी तलवार से उसका सिर कलम कर दिया। गद्दारों की वजह से ही अंग्रेजी सेना महलों में घुसने में सफल हुई। मजबूरी में रानी को महल छोड़ना पड़ा। तब झलकारी ने योजना के अनुसार ही अंग्रेजी सेना से मोर्चा संभाला और झांसी की रानी सुरक्षित राजकुमार को लेकर महल से निकल गईं।

अंत में ब्रिटिश फौजियों द्वारा झलकारी बाई को गिरफ्तार करके कड़े पहरे में रखा गया लेकिन झलकारी बाई अवसर पाकर रात में भाग निकलने में कामयाब हो गईं और दूसरे दिन पति के साथ किले पर फिर मोर्चा संभाल लिया। अंग्रेजी फौज से बहादुरी से लड़ते हुए पति पूरन सिंह और झलकारी बाई अंग्रेजों द्वारा बरसाए गए गोलों से एक साथ बलिदान हो गए। जय भवानी बोल कर उन्होंने अपनी आखिरी सांस ली। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का वेश धर कर अंग्रेजों को झांसा देकर वीरगति को प्राप्त करने वाली वीरांगना झलकारी बाई की आज 194वीं जयंती है। ऐसी वीरांगना को जन्म जयंती पर शत-शत नमन।